अभिज्ञान शाकुन्तलम् -

सप्रसङ्ग व्याख्या करें -

असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः।
सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः॥

(प्रथम अंक - 21)

प्रस्तुत व्याख्येय श्लोक महाकवि कालिदास रचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक के प्रथम अंक से उद्धृत है। कालिदास की काव्य-प्रतिभा अद्भुत है, जिसके बिना संस्कृत-साहित्य सूना रहेगा। कवियों की श्रृंखला में कालिदास एक ऐसी जगमगाती कड़ी हैं, जिनके सरस काव्यों का बार-बार अवगाहन किया जाता है और ऐसा ही लोक-विश्रुत है, उनका यह नाटक भी जो विश्व-रंगमंच पर आज भी अभिनीत होता है और ख्याति प्राप्त करता है। काल के व्यवधान में भी धूमिल न होनेवाला यह नाटक उनके पात्र-चयन, कथा के नये विस्तार एवं कोमल पदावलियों से पूरित होने से है।

महाभारत के शान्तिपर्व में आयी एक छोटी सी कथा को पूर्ण विस्तार देकर उन्होंने पात्रों को गरिमा भी प्रदान की है। चक्रवर्ती सम्राट दुष्यन्त प्रजाजनों की देखभाल एवं आखेट-प्रियता के कारण वनप्रान्त में प्रवेश करता है। सुन्दर हरिण का पीछा करते हुए वह अकस्मात् तपोवन में प्रवेश करता जाता है। तपस्वियों के द्वारा रोके जाने पर उसे ज्ञात होता है कि - 'यह आश्रम है'। आश्रमवासियों के प्रति उदारता के कारण उनके कुशल-क्षेम जानने हेतु आश्रम में प्रविष्ट होने पर उसे यह ज्ञात होता है - कुलपति कण्व उस समय आश्रम में नहीं है और उन्हें आश्रम की

कार्यभार और आतिथ्यभार अपनी पालिता पुत्री शकुन्तला को सौंपा है।

इस वृत्तान्त को जाने बिना जब राजा आश्रम में प्रवेश करता है तो उसके सम्मुख तीन तपस्विनी कन्याएँ वृक्ष-सेंचन का कार्य करती दिखाई देती हैं। इनमें से एक अप्रतिम सौन्दर्यशालिनी के प्रति राजा का सहज आकर्षण दिखाई पड़ता है। वह हतप्रभ है इस अमानवीय सौन्दर्यमय को देखकर। सौन्दर्य अभिभूत राजा को सखियों से शकुन्तला का परिचय बाद में मिलता है। इसके पूर्व वह ऋषि द्वारा दिए गए आश्रम के कठिन कार्यों की मन में आलोचना करते हुए सोचता है – 'ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति'

"किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्" कहकर उसके रूप सौन्दर्य की सराहना करता है।

राजा का विवेक उसे सजग करता है - उसका आकर्षण यथोचित है? यह ऋषि की कन्या कहीं दूसरे वर्ण की स्त्री से उत्पन्न तो नहीं हुई है? फिर स्वयं ही उस सन्देह का निवारण कर कहते हैं–

"असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा ....प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः"

अर्थात् निश्चय ही यह कन्या क्षत्रियों के ग्रहण करने योग्य है, क्योंकि मेरा आर्य-मन (विवेकी या शुद्ध) उसकी ओर आकर्षित हुआ है। क्योंकि सज्जनों के मन में जिस बात पर शंका हो, वहाँ यदि उसका मन उसके साथ है तो वह ठीक है।